तर्ज-रहा गर्दिशों में हरदम

दुख के जहां में रहना,रूह को नहीं गंवारा
यहां बेबसी का आलम,कोई बस नहीं हमारा

1-कैसा अजब ये सपना,यहां कोई नहीं हैअपना
नज़रें तरस गई हैं नज़रों को दो नज़ारा

2- तुझको रिझाऊं कैसे करूं अर्ज भी तो कैसे
माया ने सब वो लूटा जो था असल हमारा

3-जिस दिल को मेरे दिलबर तुमने अर्श कियाहै
हाय क्या करूं वो दिल भी न हो सका तुम्हारा

4- नज़रें करम से तुमने अपना बना लिया है
कुर्बान हो सकी ना न अपना आप वारा

Nijanand App